एग्रोटेक में स्कूली बच्चों ने दिखाया हुनर

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) के हीरक जयंती और एग्रोटेक 2013 में चार सौ से अधिक स्कूली बच्चों ने अपना हुनर दिखाया। महिलाओं के गुड़ से बनाए गए कई व्यंजनों को लोगों की खूब सराहना मिली। वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने बताया कि एलपीएस, पायनियर मॉण्टेसरी स्कूल, सीएमएस सहित कई स्कूलों के बच्चों के लिए चित्रकला, मेढक दौड़, प्रश्नोत्तरी सहित कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजयी छात्रों को निदेशक डॉ. सुशील सोलमन ने पुरस्कृत किया। बीज, नई तकनीक के औजार सहित खेती से जुड़ी जानकारी के लिए लगे स्टालों में दिन भर किसानों की भीड़ रही।

गन्ना अनुसंधान संस्थान के हीरक जयंती समारोह में पुरस्कृत किये गये प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी

स्वतंत्र भारत

राजधानी

'गन्ना खेती की अर्थव्यवस्था पर ध्यान देना आवश्यक'

लखनऊ (सं.)। गन्ने की खेती की अर्थव्यवस्था तथा अन्य क्षेत्रों का इसके पड़ने वाले प्रभाव पर गहन ध्यान देने पर बल दिया। उक्त बातें सम्मान समारोह में आये मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो० आर बी सिंह ने 'राष्ट्र को भूख से स्वतंत्रता दिलाएं' विषय पर आईआईएसआर हीरक जयन्ती व्याख्यान में कहा। उन्होंने कृषि में विशेषता उ० प्र० में कम निवेश होने पर चिन्ता जताई। उन्होंने गन्ने के उत्पादन में चक्रीय परिवर्तन को दृष्टिगत करते हुए गन्ना उत्पादन प्रणाली में सामाजिक - आर्थिक शोध का सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया। उन्होंने नीति को प्रभावित करने वाले शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई।

प्रो. सिंह ने संस्थान के कई प्रकाशनों का विमाचन भी किया।

संस्थान के हीरक जयंती समारोह के अवसर पर कई सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। प्रो. सिंह ने वैज्ञानिकों को गत् ६० वर्षों के अनुसंधान उपलब्धियों के लिए बधाई दी। उन्होंने वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए उन्हें समाज का वास्तविक परिवर्तक बताया। इस मौके पर डा. एस. सोलोमन, निदेशक ने संस्थान के एक दिवंगत वैज्ञानिक, डा. बी. एल. श्रीवास्तव, जिन्होनें गन्ने की उच्च शर्करा युक्त शीघ्र विकसित होने वाली कोलख ९४१८४ प्रजाति विकासित की थी, के योगदान को याद किया तथा उनके परिवार को स्मृति चिन्ह देते हुए सम्मानित किया। उनके द्वारा विकसित यह प्रजाति पूर्वी उ० प्र० तथा बिहार में काफी लोकप्रिय हो रही है। डा. एन गोपालाकृष्णन, सहायक महानिदेशक व्यावसायिक फ सलें, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने विगत एक वर्ष में संस्थान में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए बधाई दी।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय शर्कस महोत्सव २०१३ के दूसरे दिन चमकती धूप व स्वच्छ मौसम के कारण विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी जिनमें गृहणियों व कामकाजी महिलाओं के साथ विभिन्न छात्र छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस उपलक्ष्य में कई प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। जिनमें ३५ विद्यालयों के ४०० से अधिक छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं ने हिस्सा लिया। इस सुअवसर पर 'गुड़, गन्ने का रस व शर्करा से निर्मित नवीन भोज प्रदार्थ बनाने की प्रतियोगिता' में १९ छात्राओं व १७ गृहणियों ने भाग लिया। विद्यार्थी श्रेणी का प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः श्वेता मौर्या ;आई.टी. कालेज, शालिनी सिंह अम्बेडकर विश्वविद्यालय, तथा आकांक्षा मिश्रा आई.टी. कालेज, ने जीता। गृहणियों-कामकाजी महिलाओं की श्रेणी में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः गीतांजली हसानी, बीना शर्मा व शालिनी बाजपेयी ने जीता।

योगासन प्रतियोगिता में मृदुल कुमार, तनिष्क कुमार, सोनाली शर्मा तथा रेनु यादव ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। संस्थान की ओर से विजयी प्रतिभागियों को निदेशक डा. एस. सोलोमन ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। डा. राधा जैन, डा. रामजी लाल, डा. एम. स्वपना एवं डा. एस. एन. सुशील ने विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की। इस अवसर पर आयोजित कृषि प्रदर्शनी में आसपास के जनपदों के ५०० किसानों ने भ्रमण कर नवीनतम प्रोद्यौगिकी की जानकारी हासिल की।

श्री टाइम्स श्री लखनऊ
लखनऊ • सोमवार • 18 फरवरी, 2013

कृषि विकास पर गोलमेज सम्मेलन

किसानों ने सीखे कृषि रक्षा के गुर

एग्रोटेक-2013 में युवा और महिला किसानों ने की शिरकत

सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान(आईआईएसआर) में चल रहे उत्तर प्रदेश एग्रोटेक-2013 के दूसरे दिन रविवार को किसानों की भारी भीड़ देखने को मिली। एग्रोटेक द्वारा आयोजित कृषि मेले में कृषि विकास पर आयोजित गोलमेज सम्मेलन में कृषि का रोडमैप तैयार किया गया। मेले में आए किसानों को कार्यशला थियेटर और चलचित्रों के माध्यम से जागरूक किया गया। मेले के दूसरे दिन प्रदेश के दूर-दराज क्षेत्रों से आए लगभग दस हजार किसानों ने शिरकत की। इसमें युवा और महिला किसानों ने भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान आए हुए किसानों को कृषि संबंधी आधुनिक तकनीकों से अवगत कराया गया।

इस प्रर्दशनी में केन्द्र एवं प्रदेश सरकार सहित कृषि क्षेत्र में कार्य कर रही कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्राइवेट कंपनियां अपना स्टाल लगाकर किसानों को अपनी उन्नत किस्म के बीजों एवं कृषि यंत्रों से परिचित करा रही हैं। एग्रोटेक 2013 के अन्तर्गत किसानों को कृषि रक्षा, पशुपालन, कीट प्रबंधन, फसल सुरक्षा, भंडारण एवं बागवानी की बारीकियों से लोगों को अवगत कराया गया। इसके अलावा, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी उद्योग, पोल्ट्री के बारे में भी लोगों को जानकारी दी गई। मेला में गेहूं, धान, गन्ना, मक्का और मेंथा की खास किस्मों और उन्नत ढंग से खेती करने के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई।

गौरतलब है कि गोलमेज सम्मेलन में कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों, कंपनी के प्रमुखों व निवेशकों ने हिस्सा लिया। इसमें कृषि विशेषज्ञों ने कृषि की दशा और दिशा पर चर्चा की। सम्मेलन की शुरुआत करते हुए एग्रोटेक के चेयरमैन डा. एमजे खान ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार, उद्योग और कृषि संस्थानों को मिलकर कार्य करना होगा।

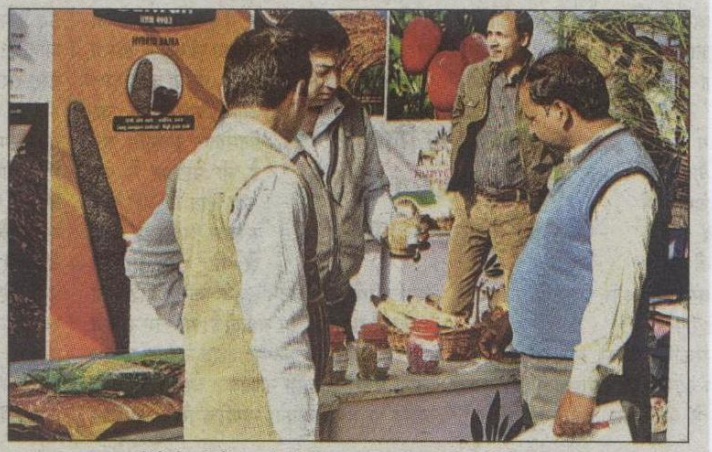

मेले में बीजों व औषधियों का अवलोकन करते किसान

सौ मिलियन डालर के निवेश से मिलेगी बढ़त

लखनऊ। विश्व की शीर्ष बायोटेक कंपनी के सीईओ डा. ज्ञानेन्द्र शुक्ला ने उत्तर प्रदेश में बीज और बायोटेक के क्षेत्र में अगले पांच वर्षों में 100 मिलियन डालर निवेश करने की इच्छा भी जताई है। लेमकेन इंडिया के प्रबंध निदेशक अरविन्द कुमार व मिस्टर तिलो गांडी ने कहा कि यूपी में मशीनीयुक्त खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने इसके लिए सरकार से अनुबंध करने का भी प्रस्ताव रखा है। न्यू हालैंड फियट इंडिया के हेड संजय ने बताया कि जो कृषि यंत्र अमेरिका में उपयोग हो रहे हैं, वे यंत्र इसी वर्ष यूपी में लान्च किए जाएंगे। इन कृषि यंत्रों में एडवान्स केन हारवेस्टर कंबाइन है जो कि गन्ना किसानों के लिए बहुत उपयोगी है। भारत की शीर्ष बीज कंपनी नूजीवीडू ने प्रस्ताव रखा है कि वह बीज अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए तैयार है। इसके लिए राजधानी के नजदीक 20 एकड़ का फार्म भी ले लिया है। कंपनी इसमें 100 करोड़ का निवेश करेगी।

एक्जिम बैंक मुंबई की सुमन सरकार ने कहा कि खादी उत्पादों को बढ़ावा प्रदान करने के लिए जुलाई माह में इसी तरह का आयोजन आगरा में करेगी। उन्होंने बताया कि हमारा बैंक कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए किसानों को फंड भी मुहैया कराएगी। सम्मेलन में टाटा केमिकल के वाइस प्रेसीडेंट डा. बीबी सिंह, डाबर ग्रुप के डा. अनूप कालरा और क्लास इंडिया लिमिटेड के एडीपीके मलिक प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

एग्रोटेक-2013 : कृषि विकास की रूपरेखा तय

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के तीन दिवसीय हीरक जयंती समारोह के दूसरे दिन रविवार को एग्रोटेक-2013 के तहत आयोजित गोलमेज सम्मेलन में कृषि विकास की रूपरेखा तय की गई। कृषि विशेषज्ञों ने खेती की दशा व दिशा पर चर्चा की। इसके अलावा किसानों को कृषि रक्षा, पशुपालन, कीट प्रबंधन, फसल सुरक्षा, भंडारण एवं बागवानी की बारीकियों से अवगत कराया गया। मेला में धान, गेहूं, मक्का, और मेंथा की खास किस्मों और उनकी उन्नत खेती के तरीकों के बारे में किसानों को बताया गया। मत्स्यपालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी व पोल्ट्री उद्योग के बारे में भी जानकारी दी गई।

गोलमेज सम्मेलन में एग्रोटेक के चेयरमैन डॉ. एमजे खान ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार, उद्योग और कृषि संस्थानों को मिलकर काम करना होगा। इसमें प्रदेश सरकार की अहम भूमिका होगी। विश्व की शीर्ष बायोटेक कम्पनी के सीईओ डॉ. ज्ञानेंद्र शुक्ला ने उत्तर

मेले में किसान सीख रहे कृषि रक्षा पशुपालन और भंडारण के गुण

प्रदेश में बीज और बायोटेक के क्षेत्र में अगले पांच वर्ष में सौ मिलियन डॉलर निवेश करने की इच्छा जताई। लेमकेन इंडिया के अरविंद कुमार व तिलो मांडी ने कहा कि यूपी में खेती में यंत्रीकरण को बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने इसके लिए सरकार से अनुबंध करने का प्रस्ताव भी रखा। न्यू हालैंड फियर इंडिया के हेड संजय ने कहा कि जो कृषि यंत्र अमेरिका में उपयोग हो रहे हैं, वे इसी वर्ष यूपी में लांच किए जाएंगे। इन कृषि यंत्रों में एडवांस केन हारवेस्टर कम्बाइन गन्ना किसानों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

भारत की शीर्ष बीज कम्पनी नूजीबीडू की ओर से प्रस्ताव रखा गया कि वह बीज अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए तैयार है। इसके लिए राजधानी के नजदीक 20 एकड़ का फार्म ले लिया गया है। कम्पनी इसमें सौ करोड़ का निवेश करेगी। एक्जिम बैंक मुम्बई की सुमन सरकार ने कहा कि खादी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए जुलाई में इसी तरह का आयोजन आगरा में किया

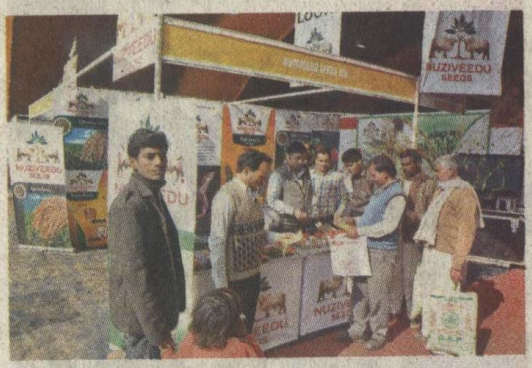

जाएगा। राष्ट्रीय सूचना केंद्र दिल्ली के डॉ. एम मोनी ने कहा कि वह कृषि सुधार के लिए यूपी सरकार से अनुबंध करना चाहती हैं। सम्मलेन में टाटा केमिकल के वाइस प्रेसीडेंट डॉ. बीबी सिंह, डाबर ग्रुप के डॉ. अनूप कालरा, क्लास इंडिया के एडी पीके मल्लिक आदि भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में उपस्थि कम्पनियों की ओर से कुल एक हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का यूपी में निवेश की इच्छा जताई गई। मेले में दूसरे दिन किसानों व विभिन्न कॉलेजों, स्कूलों के बच्चों की भारी भीड़ देखी गई। रविवार को कामकाजी महिलाओं व छात्र-छात्राओं के बीच कई प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इनमें 35 विद्यालयों के 400 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। गुड़, गन्ने का रस व शर्करा से निर्मित नवीन भोज बनाने की प्रतियोगिता में 19 छात्राओं व 17 गृहिणियों ने भाग लिया। इसमें विद्यार्थी श्रेणी का प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः आईटी कॉलेज की श्वेता मौयाई, अम्बेडकर विश्वविद्यालय की शालिनी सिंह तथा आईटी कॉलेज की आकांक्षा मिश्रा रहीं। गृहिणियों में गीतांजलि हसानी को प्रथम, बीना शर्मा को द्वितीय तता शालिनी बाजपेयी को तृतीय स्थान मिला। योगासन प्रतियोगिता में मृदुल कुमार, तनिष्क कुमार, सोनाली शर्मा तथा रेनू यादव ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। संस्थान की ओर से विजयी प्रतिभागियों को निदेशक एस सोलोमन ने पुरस्कृत किया। प्रतियोगिताओं का आयोजन डॉ. राधा जैन, डॉ. रामजी लाल, डॉ. एम स्वप्ना व डॉ. एसएन सुशील ने किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों को भी सम्मानित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. आरबी सिंह थे। इनमें मुख्य रूप से गन्ने की उच्च शर्करायुक्त शीघ्र विकसित होने वाली कोलख 94184 प्रजाति विकसित करने वाले दिवंगत वैज्ञानिक डॉ. बीएल श्रीवास्तव के परिवार को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

लखनऊ
कैनविज टाइम्स
सोमवार, 18 फरवरी, 2013

कृषि यंत्रीकरण की दिशा में गन्ना अनुसंधान संस्थान की पहल

गन्ना के लिए सबसे सस्ता हार्वेस्टर बनाने का दावा

राजेश पटेल

एक लाख रुपए का यह यंत्र एक वर्ष के अंदर किसानों को उपलब्ध हो सकेगा

लखनऊ। गन्ना कटाई व छिलाई के लिए अभी तक उपलब्ध एक करोड़ रुपए से ज्यादा मूल्य के विदेशी हार्वेस्टर के दिन लदने वाले हैं। इनका स्थान शीघ्र ही भारतीय गन्ना अनुसंधान परिषद द्वारा निर्मित बहुत ही सस्ता हार्वेस्टर खेतों में दिखाई देगा। इसका मूल्य करीब एक लाख रुपए है। इसे 50 हॉर्सपावर के ट्रैक्टर से जोड़ा गया है। जरूरत पड़ने पर इसे ट्रैक्टर से जोड़ लेना है। जरूरत नहीं तो घंटेभर में अलग कर ट्रैक्टर से दूसरा काम लिया जा सकता है। फिट करने में भी एक घंटा से कम समय लगेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके रखरखाव पर भी नहीं के बराबर खर्च है। इसे खासकर उत्तर प्रदेश की खेती को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। अभी यह परीक्षण के दौर में है। एक वर्ष के अंदर खेतों में दिखाई पड़ने लगेगा।

भारतीय गन्ना अनुसंधान परिषद लखनऊ की हीरक जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित शर्करा महोत्सव व एग्रोटेक-2013 में प्रदर्शित किया गया यह हार्वेस्टर किसानों की उत्सुकता व आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

इस सस्ते हार्वेस्टर को बनाया है संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश कुमार सिंह व डॉ. पृथ्वीराज सिंह ने। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने बताया कि अभी तक गन्ना कटाई के लिए जो भी हार्वेस्टर हैं, वह चार फीट के अंतराल पर बोए गए गन्ने को ही काट सकते हैं। उत्तर प्रदेश में किसान ढाई से तीन फीट की दूरी पर गन्ना बोता है। दक्षिण भारत में चार फीट की दूरी पर बोवाई होती है। इसलिए डेढ़ से चार करोड़ रुपए मूल्य के विदेशी हार्वेस्टर उत्तर प्रदेश में सफल हो ही नहीं सकते। यहां का किसान तो एक फीट की दूरी पर भी बो देता है। इसीलिए संस्थान के वैज्ञानिकों ने इस हार्वेस्टर को तैयार किया। यह 30 सेंटीमीटर से लेकर एक मीटर तक की दूरी पर बोए गए गन्ने की कटाई करने में सक्षम है। गिरे गन्ने को भी उठाकर काट देगा। डॉ. शाह ने बताया कि महंगे विदेशी हार्वेस्टर की खासियत यह है कि वह गन्ने को एक-एक, दो-दो फीट के टुकड़े भी साथ करता जाता है, जो यहां के हिसाब से बिल्कुल उचित नहीं है। यह उस परिस्थिति में ठीक है, जब उस गन्ने की पेराई 24 घंटे के अंदर हो जाए। देसी मशीन में गन्ना बिल्कुल खड़ा रहता है। पेराई में देर होने से भी उसके रस पर कोई असर नहीं पड़ता। हां, इसके लिए छिलाई यंत्र अलग से लेना होता है। विदेशी में मजदूर की एकदम जरूरत नहीं होती। देसी में कुछ मजदूर लगेंगे। क्योंकि यह हार्वेस्टर सिर्फ कटाई करेगा। उसकी छिलाई मशीन से करने में भी कुछ मजदूरों की जरूरत होगी, हाथ से करने में भी। पर, ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहां इस वर्ष भर हार्वेस्टर का काम नहीं होता। सीजनल काम के लिए यह बहुत ही उपयुक्त है। डेढ़ करोड़ रुपए फंसाने वाले किसान भी कम ही हैं। ट्रैक्टर आम तौर पर सभी किसानों के पास है। इसमें एक लाख रुपए का यंत्र लगा लिया। जरूरत न होने पर निकाल कर रख दिया। परीक्षण यह हो रहा है कि इसका कौन सा यंत्र शीघ्र खराब होगा। जो खराब होगा, उसमें संशोधन किया जाएगा। हालांकि अभी तक इसका प्रयोग बहुत ही उत्साहवर्द्धक है।

the pioneer

UCKNOW MONDAY I FEBRUARY 18, 2013

city 04

Diamond Jubilee celebrations of IISR continue on second day

PIONEER NEWS SERVICE
LUCKNOW

The second day of Indian Institute of Sugarcane Research (IISR), Lucknow's Diamond Jubilee celebrations and National SugarFest 2013 was marked by great enthusiasm at IISR, Lucknow on Sunday. Various competitions and activities were organised to mark the occasion.

The IISR Diamond Jubilee Lecture on "Freeing the Nation of the Hunger" was delivered by President, National Academy of Agricultural Sciences (NAAS), New Delhi, Prof RB Singh.

Prof Singh released number of publications of the Institute and appreciated the research and developmental efforts made by the scientists. He advised that the knowledge acquired due to research and brought out in the form of publications be made known to the stakeholders or farmers at a faster speed.

Showing concern over low investment in agriculture, particularly in the state, he emphasised upon the socio-economic concerns of sugarcane production system in the wake of cyclic changes in its production and advised to strengthen the socio economic research in the Institute. "The research efforts should be such that it is able to influence policy framed for the same," advised.

The retired scientists of IISR were felicitated on the eve of the Foundation Day of the Institute by Prof RB Singh.

While felicitating the retired scientists of the Institute, Prof Singh, said the scientists are the real change markers and thanked the scientists for their achievements made during last 60 years.

Director of the Institute, Dr S Soloman, remembered the contribution of a scientist, Late BL Srivastava for developing a very good high yield sugar variety CoLk 94184 and honoured his family for the contribution made by him by presenting a citation and memento.

"The variety developed by him had become very popular in Eastern UP and Bihar," said Dr Soloman.

The other attractions of day were competitions for children, students and also for the housewives and working ladies.

Sweta Maurya of IT College and Geetanjali Hasani of Lucknow Public School bagged first prize under students and working ladies category respectively in innovative food recipe preparation from gur, cane, juice and sugar.

Mirdul Kumar, Tanishq Singh, Sonali Sharma and Renu Yadav of New Public Inter College, LDA Kanpur Road bagged first prizes in Yoga Asana competitions under different age group categories. About 400 students from 35 schools participated in various competitions held on the occasion.

About 500 farmers from nearby districts visited the exhibition and interacted with the organisers.

सहारा समय
अपना शहर
लखनऊ
लखनऊ | सोमवार • 18 फरवरी • 2013

कृषि सम्बन्धी शोधों को बढ़ावा देने की जरूरत : प्रो. सिंह

लखनऊ (एसएनबी)। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. आरबी सिंह ने कहा है कि देश व कृषि के विकास के लिए नीति को प्रभावित करने वाले शोध को बढ़ावा देने की जरूरत है। प्रो. सिंह भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के हीरक जयन्ती समारोह के दूसरे दिन 'राष्ट्र को भूख से स्वतंत्रता दिलाए' विषय पर अपना व्याख्यान दे रहे थे।

प्रो. सिंह ने अपने व्याख्यान में गन्ने की खेती की अर्थव्यवस्था तथा अन्य क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बताया। उन्होंने कृषि में कम निवेश होने पर चिन्ता जलायी और गन्ने के उत्पादन में चक्रीय परिवर्तन को दृष्टिगत करते हुए गन्ना उत्पादन प्रणाली में सामाजिक व आर्थिक शोध को सुदृढ़ करने पर जोर दिया। हीरक जयन्ती के अवसर पर संस्थान की ओर से कई सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डा. एस सोलोमन ने संस्थान के एक दिवंगत वैज्ञानिक डा. बीएल श्रीवास्तव के योगदान की सराहना करते हुए उनके परिवार को स्मृति चिह्न दिया। डा. श्रीवास्तव ने गन्ने की उच्च शर्करा युक्त शीघ्र विकसित होने वाली कोलख-94184 प्रजाति विकसित की थी जो पूर्वी उत्तर प्रदेश व बिहार में काफी लोकप्रिय हो रही है। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डा. एन गोपालाकृष्णन ने पिछले एक वर्ष में संस्थान की कई उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए इसे और विकसित होने की बात कही। इस अवसर पर विद्यार्थियों व गृहणियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्रों की प्रतियोगिताओं के लिए 35 विद्यालयों के 400 से अधिक छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं ने भाग लिया। गुड़, गन्ने का रस व शर्करा से निर्मित नवीन भोज बनाके की प्रतियोगिता में 19 छात्राओं व 17 गृहणियों ने भाग लिया। विद्यार्थी श्रेणी में प्रथम पुरस्कार श्वेता मौर्या (आईटी कालेज), द्वितीय पुरस्कार शानिली सिंह (अम्बेडकर विश्वविद्यालय) तथा तृतीय पुरस्कार आकांक्षा मिश्रा (आईटी कालेज) ने जीता। गृहणियों की श्रेणी में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः गीतांजली हसानी, बीना शर्मा व शानिली बाजपेयी ने जीता। विजयी प्रतिभागियों को संस्थान के निदेशक ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

▶ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का हीरक जयन्ती समारोह
▶ सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों का किया गया सम्मान